Reflective-teaching - चिन्तन-शिक्षण

Reflective Level of teaching (चिन्तन-स्तर पर शिक्षण)

शिक्षण कक्षा में निश्चित कार्यों को सम्पन्न करने की एक व्यवस्था है। जिसका उद्देश्य छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित करना है। शिक्षण के उद्देश्य अत्यन्त स्पष्ट होने चाहिये तभी शिक्षक प्रभावशाली साधनों का प्रयोग कर इसे अधिक शक्तिशाली बना सकता है। शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत 'पाठ्यवस्तु' एक महत्वपूर्ण उपागम है, जिसके बिना शिक्षण नहीं हो सकता। "एक ही पाठ्यवस्तु को शिक्षण उपागम परिस्थितियाँ विचारहीन से लेकर विचारपूर्ण स्थिति तक ले जा सकती है।" अतः शिक्षण की प्रक्रिया की परिस्थितियों को हम एक सतत क्रम पर क्रियाओं की अवस्थाओं या स्तरों में विभाजित कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षण की पूर्ण प्रक्रिया को निम्नलिखित तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

शिक्षण के स्तर

↓

स्मृति स्तर	बोध स्तर	चिन्तन स्तर
(Memory Level)	(Understanding Level)	(Reflective Level)

स्मृति स्तर ⟶ बोध स्तर ⟶ चिन्तन स्तर

प्रारम्भ — शिक्षण प्रक्रिया — अन्त

Reflective-teaching - (चिन्तन-शिक्षण)

चिन्तन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है। इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्रों में चिन्तन, तर्क तथा कल्पना शक्ति को बढ़ाता है ताकि बाद में वे छात्र इन उपागमों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। इस स्तर पर शिक्षण में स्मृति तथा बोध दोनों स्तरों का शिक्षण निहित होता है। इसके अभाव में चिन्तन स्तर का शिक्षण सफल नहीं हो सकता।

चिन्तन-स्तर पर शिक्षण समस्या-केन्द्रित होती है। शिक्षक छात्रों के सामने कोई सम्बन्धित ज्वलन्त समस्या प्रस्तुत करता है जिस पर छात्र सक्रिय व अभिप्रेरित होकर स्वयं चिन्तन प्रारम्भ कर देते हैं। यह चिन्तन आलोचनात्मक दृष्टिकोण वाला मौलिक चिन्तन होता है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों के बोध-स्तर को भी विकसित करने के अवसर देते हुये शिक्षक का कार्य है उनमें सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करना। यह शिक्षण का सर्वोच्च स्तर है और पूर्णतया विचारवान है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्र अपनी अभिव्यक्ति, धारणा, विचार, मान्यता तथा ज्ञान के अनुसार समस्या-समाधान के लिये विचार तथा तर्क करते हुये नवीन ज्ञान की खोज करते हैं। यह एक उत्पादक स्थिति है जिसमें निर्णय, खोज, शोध व सृजन को जन्म दिया जाता है।

इस स्तर पर छात्र स्वयं रुचि लेकर, स्वेच्छा से चिन्तन, मनन, तर्क व कल्पना करते हुये समस्या का समाधान खोजते हैं और स्वयं को अधिक आत्म विश्वास वाला, क्रियाशील तथा सक्रिय छात्र बनाते हैं। इस स्तर पर शिक्षणार्थ, शिक्षकों को योग्य, अनुभवी, विषय तथा क्रिया विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली होना चाहिये।

इस स्तर पर शिक्षण हेतु हण्ट महोदय का शिक्षण प्रतिमान के पक्ष काफी प्रचलित है, जो इस प्रकार है —

शिक्षण प्रतिमान-पक्ष

- उद्देश्य (focus)
- संरचना (syntax)
- सामाजिक प्रणाली (social system)
- मूल्यांकन प्रणाली (support system)

(1) उद्देश्य (focus) -

(i) छात्रों में मौलिक व स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति का विकास करना।

(ii) छात्रों में समस्या-समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास करना।